ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

वर्ष 44, अंक 9 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 18 जनवरी, 2021 से रविवार 24 जनवरी, 2021
विक्रमी सम्वत् 2077 सृष्टि सम्वत् 1960853121
दयानन्दाब्द : 197 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
दूरभाष: 23360150 ई-मेल : aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें - www.thearyasamaj.org/aryasandesh

सम्पादकीय

वैबसीरीज पर तांडव - केवल शरारत नहीं गहरी साजिश है

पहली बार, अन्तिम बार, बार-बार या हर बार हिन्दू आस्थाओं पर चोट देगा 'ताण्डव'

ओ.टी.टी. प्लेटफार्म लगे सरकारी अंकुश - आर्यसमाज की मांग

तांडव को लेकर कई दिन से सोशल मीडिया पर विरोध मचा हुआ है इसी के चलते धार्मिक भावनाओं को आहत करने के लिए वेब सीरीज तांडव के प्रमुख, निदेशक, निर्माता और लेखकों के खिलाफ लखनऊ के हजरतगंज पुलिस स्टेशन में पहली एफ. आई.आर. दर्ज भी की गई है। बढ़ते विरोध को देखते हुए सूचना और प्रसारण मंत्रालय ने भारत में अमेजन प्राइम वीडियो के अधिकारियों को तलब किया है।

एफआईआर के अनुसार, पुलिस ने सोशल मीडिया पर तांडव के बारे में प्रतिकूल टिप्पणियां देखीं और जांच में पाया कि यह सीरीज अश्लील है, धार्मिक भावनाओं को आहत करती है और हिंदू देवी-देवताओं को आपत्तिजनक तरीके से चित्रित करती है, प्राथमिकी यह भी कहती है कि सीरीज जाति विभाजन को बढ़ावा देती है और भारत के प्रधानमंत्री की पूरी तरह से नकारात्मक छवि को दर्शाती है। जेएनयू के वामपंथी छात्रों को हीरों और जनेऊ वाले राष्ट्रवादी छात्रों को विलेन। शायद तभी भारतीय जनता पार्टी के सांसद मनोज कोटक ने सूचना और प्रसारण मंत्री प्रकाश जावड़ेकर को पत्र लिखकर तांडव पर हिंदू देवताओं का उपहास करने के लिए प्रतिबंध लगाने की मांग की।

हालाँकि उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के सूचना सलाहकार शलभमणि त्रिपाठी ने एफआईआर की कॉपी शेयर करते हुए अपने ट्वीट में लिखा, जन भावनाओं के साथ खिलवाड़ बर्दाश्त नहीं, घटिया वेब सीरीज की आड़ मं नफरत फैलाने वाली वेब सीरीज तांडव की पूरी टीम के खिलाफ योगीजी के उत्तर प्रदेश में गंभीर धाराओं में मामला दर्ज किया है, जल्द गिरफ्तारी की तैयारी करेगी।

जानकारी के मुताबिक, तांडव वेब सीरीज में दलितों का भयानक अपमान किया गया है, हिन्दू और मुसलमान को लड़ाने और भड़काने वाली बातें की गयी हैं। हिन्दू धर्म का अपमान बार-बार करने की कोशिश की गई हैं तांडव वेब सीरीज

.....जानकारी के मुताबिक, तांडव वेब सीरीज में दलितों का भयानक अपमान किया गया है, हिन्दू और मुसलमान को लड़ाने और भड़काने वाली बातें की गयी हैं। हिन्दू धर्म का अपमान बार-बार करने की कोशिश की गई हैं तांडव वेब सीरीज में, पुलिस अधिकारीयों का अपमान करने की कोशिश की गई है। यानि ये एक जहर से भरी हुई वेब सीरीज है। जो इस देश में अव्यवस्था फैलाना चाहती है। इस वेब सीरीज में ऐसा कंटेंट जानबूझकर डाला गया है ताकि जातिगत हिंसा और धार्मिक हिंसा को बढ़ावा दे और वामपंथियों और पीएफआई जैसे देश विरोधी संगठनों को एजेंडा आगे बढ़ाये। .....

में, पुलिस अधिकारीयो का अपमान करने की कोशिश की गई है। यानि ये एक जहर से भरी हुई वेब सीरीज है। जो इस देश में अव्यवस्था फैलाना चाहती है। इस वेब सीरीज मे ऐसा कटेंट जानबूझकर डाला गया है ताकि जातिगत हिंसा और धार्मिक हिंसा को बढ़ावा दे और वामपंथियों और

- शेष पृष्ठ 2 पर

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, वैदिक मिशन मुम्बई एवं आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के संयुक्त तत्त्वावधान में

पदमिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ का पुनः प्रारम्भ समारोह एवं आर्य उपदेशक सम्मेलन सम्पन्न

3 जनवरी, 21 चित्तौड़गढ़, राजस्थान। वैदिक मिशन मुम्बई, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्य प्रतिनिधि सभा मुम्बई के संयुक्त तत्वावधान में भारतीय आर्य भजनोपदेशक परिषद का अधिवेशन एवं पदमिनी आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़ गढ़ का पुनः प्रारंभ समारोह अत्यंत उत्साह और प्रसन्नता के वातावरण में संपन्न हुआ। इस अवसर पर आर्य जगत के मूर्धन्य संन्यासियों में स्वामी प्रणावानंद जी, आचार्य स्वामी वृतानंद जी, स्वामी आर्यवेश जी, प्रो. विट्ठल राव जी, आर्य नेताओं में सार्वदेशिक सभा के मंत्री श्री प्रकाश आर्य जी, दिल्ली सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य जी, भजनोपदेशक परिषद के अध्यक्ष श्री सहदेव सिंह बेधड़क जी, श्री योगेश आर्य जी, श्री कैलाश कर्मठ जी, वैदिक मिशन मुम्बई के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव शास्त्री जी इत्यादि अनेक अन्य आर्यजगत के महान अधिकारी, कार्यकर्त्ता और सदस्यगण उपस्थित थे। इस तीन दिवसीय कार्यक्रम का प्रतिदिन शुभारंभ यज्ञ से हुआ। यज्ञ की ब्रह्मा डॉ. सीमा जी एवं नव नियुक्त आचार्या नर्वदा जी के सान्निध्य में गुरुकुल की ब्रह्मचारिणयों ने सस्वर वेद पाठ किया।

गुरुकुलों का पुनरुत्थान - आर्यसमाज के नए युग के लिए शुभ संकेत

इस अवसर पर उपस्थित अनुभवी, वयोवृद्ध भजनोपदेशकों को शाल, श्रीफल

- शेष पृष्ठ 7 पर

शराब की बिक्री को बढ़ाने के लिए गठित समिति के सुझावों को लागू न करे सरकार : दिल्ली को शराब की नगरी नहीं बनने देंगे

शराब की बिक्री बढ़ाने से जरुरी है शराब बन्दी के लिए प्रयास करे सरकार - आर्यसमाज की मांग

समस्त आर्यजन, आर्यसमाजें, शिक्षण संस्थान EXCISE.POLICY@DELHI.GOV.IN पर विरोध पत्र भेजें आपत्ति दर्ज कराएं

हाल ही में दिल्ली सरकार द्वारा राज्य में शराब की बिक्री में वृद्धि के लिए उप-मुख्यमंत्री ने अपने पत्र दिनांक 4/9/20 द्वारा एक समिति गठित की थी। उस समिति ने अपने सुझाव सरकार को भेज दिए हैं। समिति ने जो सुझाव भेजे हैं वे समाज और युवा वर्ग के लिए विशेष रूप से हानिकारक हैं। समिति ने जहां हर वार्ड में 3 ठेके खोलने का सुझाव दिया है वहां शराब खरीदने/पीने की आयु 25 से घटाकर 21

नए ठेके खोलने और शराब खरीदने/पीने की आयु 25 से 21 वर्ष करना युवा पीढ़ी के साथ खिलवाड़

करने की सिफारिश की है। समिति ने दिल्ली की 59 प्रतिशत आबादी जिनकी आयु 30 वर्ष से कम है को लक्ष्य बनाते हुए सुझाव दिए हैं।

यदि समिति के सुझावों को दिल्ली में लागू किया जाता है तो दिल्ली शराब की नगरी बन जाएगी।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा ने दिल्ली की समस्त आर्यसमाजों, आर्य शिक्षण संस्थानों से तथा व्यक्तिगत रूप से समस्त आर्यजनों अपील करती है की दिल्ली सरकार को समिति के सुझावों के विरोध में पत्र भेजें और दिल्ली की पूर्ण शराब बन्दी की ओर ले जाने के लिए सरकार से मांग करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा समस्त सम्मानीय पाठकों से भी अनुरोध करती है कि आप अपने विरोध पत्र दिल्ली सरकार को EXCISE.POLICY@DELHI.GOV.IN पर ईमेल द्वारा हजारों-लाखों की संख्या में भेजें, जिससे दिल्ली की शराब की नगरी बनने से रोका जा सके और समाज के भविष्य युवा पीढ़ी को शारीरिक, मानसिक और आत्मिक विकृति से बचाया जा सके।

- विनय आर्य, महामन्त्री

देववाणी - संस्कृत

वेद-स्वाध्याय

तू ही है !

मन्ये त्वा यज्ञियं यज्ञियानां मन्ये त्वा च्यवनमच्युतानाम्।
मन्ये त्वा सत्त्वनामिन्द्र केतुं मन्ये त्वा वृषभं चर्षणीनाम्।। -ऋ० 8/96/4
ऋषिः **तिरश्चीर्द्युतानो वा मरुतः।।** देवता - **इन्द्रः।।** छन्दः **पङ्क्तिः।।**

शब्दार्थ - **इन्द्र** = हे इन्द्र! मैं **त्वा** = तुझे **यज्ञियानां यज्ञियम्** = यज्ञार्हों का यज्ञार्ह **मन्ये** = मानता हूँ, **त्वा** = तुझे **अच्युतानां च्यवनम्** = च्युत न होनेवालों का भी च्यावयिता **मन्ये** = मानता हूँ। **त्वा** = तुझे **सत्त्वनाम्** = बलशाली प्राणियों में **केतुम्** = बहुत ऊँचा उठा हुआ, झण्डा **मन्ये** = देखता हूँ और **त्वा** = तुझे **चर्षणीनाम्** = मनुष्यों का **वृषभम्** = सब कामनाओं का देनेवाला, बरसानेवाला **मन्ये** = अनुभव करता हूँ।

विनय - हे इन्द्र! मैंने तुझे जाना है, पहचाना है, मैं तुझे यज्ञियों-का-यज्ञिय करके देख रहा हूँ। इस संसार में जो ठीक यज्ञ चल रहे हैं, उन असंख्यात यज्ञों द्वारा बेशक असंख्यात देवों का यजन किया जा रहा है, किन्तु वे सब-के-सब यज्ञ और यजनीय अन्त में जिनका यजन कर रहे हैं वह एक देवों का देव तू ही है। वह यज्ञ ही नहीं है जिसका अन्तिम ध्येय तू नहीं हैं और मैं देखता हूँ कि अच्युतों का भी च्यवन तू है। संसार के लोग जिन्हें बहुत ध्रुव और स्थायी समझते हैं उन्हें तू क्षणभर में च्युत कर सकता है। अपने को अचल समझनेवाले बड़े-बड़े अभिमानी सम्राटों के सिंहासनों को तू पलक मारते में धूलि में मिला देता है, बड़े-बड़े स्थिर पहाड़ों को तू एक भूकम्प से पृथिवी के समतल कर देता है और लाखों वर्षों की उम्रवाले सम्पूर्ण ग्रहों को तू कभी एक टक्कर से चकनाचूर कर देता है। तेरी शक्ति की हम जीव लोग कल्पना तक नहीं कर सकते। हम प्राणियों में जो थोड़ी-बहुत बलराशि, सत्त्व दिखाई देता है, उस बल-राशि में तू हमसे बहुत ऊँचा उठा हुआ है, केतु-रूप है। जैसे अपने आदर्शसूचक झण्डे को देखकर उसके उपासक उससे नवोत्साह प्राप्त करते हैं, वैसे में तुझ उन्नत, अनन्त बल को देखकर अपने में महान् शक्ति-संचार को प्राप्त करता हूँ। तू हमारा 'सत्त्वों का केतु' है। तू बल (सत्त्व) का आदर्श है और प्राण (सत्त्व) या पुरुषत्व तुझमें पराकाष्ठा को पहुँचा हुआ है। इसलिए तू 'पुरुषोत्तम' है, मनुष्यों का 'वृषभ' है। पुरुष होकर भी तू हमसे इतना उत्तम है, इतना ऊँचा उठा हुआ है कि तू सबका 'वृषभ' है। पुरुष होकर भी तू हमसे इतना उत्तम है, इतना ऊँचा उठा हुआ है कि तू ऊपर से हम सब प्राणियों पर इष्ट फलों की वर्षा कर रहा है। संसार में जो असंख्यात प्राणियों की प्रतिक्षण असंख्यात इच्छाएँ पूर्ण हो रही हैं, उन्हें तू ही ऊपर से बरसा रहा है। अज्ञानी लोग समझते हैं कि हमारी इच्छा पूर्ण करनेवाला यह पुरुष है, या वह पुरुष है, दूसरे लोग समझते हैं कि हमारी इच्छा-पूर्ति करनेवाला हमारा ज्ञान है, हमारा बल है या धन है, परन्तु हे इन्द्र! मैं तो अनुभव करता हूँ कि सब मनुष्यों की सब इच्छापूर्ति करनेवाला तू ही है, एकमात्र तू ही है।

-: साभार :-
वैदिक विनय

वैदिक विनय : यह पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। अपने ज्ञानवर्धन के लिए आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।

124वें जन्म दिवस (23 जनवरी) पर विशेष

महान देशभक्त नेताजी सुभाषचन्द्र बोस

स्वतन्त्रता संग्राम के महान वीर बलिदानियों की अग्रिम पंक्ति में सुभाषचन्द्र बोस का नाम आता है। कर्तव्यनिष्ठा व वचनबद्धता आदि सद्गुणों के साथ भारतीय जनता के प्रति उदारता व सहिष्णुता की भावना से उनका जीवन ओत-प्रोत रहा। "मैं सुभाष चंद्र बोस ईश्वर को साक्षी करके शपथ लेता हूं कि मैं भारत के करोड़ों देशवासियों को स्वतंत्र कराने के लिए स्वतन्त्रता के इस युद्ध को अपने जीवन के अंतिम क्षण तक जारी रखूंगा।" अपने इस वचन पर वे जीवन के आखिरी पल तक अटल रहे। अपने जीवन के समस्त सुख-वैभवों को स्वतंत्रता की वेदी पर अर्पित कर उन्होंने स्वयं को अमर कर दिया।

महान देशभक्त नेताजी सुभाषचंद्र बोस का जन्म 23 जनवरी, 1897 को उड़ीसा के कटक शहर में हुआ था। उनके पिता का नाम रायबहादुर जानकी नाथ बोस था। माता प्रभावती देवी बड़ी ही धार्मिक प्रकृति की महिला थीं। जिनके संस्कारों का सुभाष चंद्र पर गहरा असर पड़ा। अपने बाल्यकाल से ही सुभाषचंद्र बड़े ही निर्भीक, साहसी और उदारप्रकृति के थे। सत्संग व संत-समागम का एक भी अवसर वे अपने हाथ से छूटने नहीं देते थे।

सुभाष चन्द्र बोस की किशोरावस्था की एक घटना मातृभूमि के प्रति उनके प्रगाढ़ प्रेम तथा अप्रतिम शौर्य को प्रदर्शित करती है। सन् 1915 में सुभाष चन्द्र बोस ने कलकत्ता के प्रेसीडेन्सी कॉलेज में बी. ए. की शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रवेश लिया। उस समय उनकी उम्र 18 वर्ष थी। वहां भारतीय विद्यार्थियों के प्रति अंग्रेज प्राध्यापकों का व्यवहार अच्छा न था। किसी भी छोटे-से कारण पर वे छात्रों को बड़ी भद्दी-भद्दी गालियां सुना दिया करते थे। एक बार सुभाष की कक्षा में कुछ छात्र अध्ययन कक्ष के बाहर बरामदे में खड़े थे। प्रोफेसर इ.एफ.ओटेन उधर से गुजरे और बरामदें में खड़े छात्रों पर बरस पड़े। कहने लगे-जंगली, काले बदतमीज इंडियन...। अपनी मातृभूमि का घोर अपमान होता देखकर सुभाष का खून खौल उठा। वे अपने साथियों के साथ ओटेन की शिकायत लेकर प्रधानाचार्य के पास गए। प्रधानाचार्य भी अंग्रेज ही था, अतः उसने भी ओटेन का ही पक्ष लिया। दूसरा रास्ता न पाकर सुभाष अपनी कक्षा के विद्यार्थियों सहित हड़ताल पर उतर आए, जिसका बहुत ही सकारात्मक प्रभाव पड़ा। अंततः प्रधानाचार्य और ओटेन दोनों ने मजबूर होकर छात्रों से समझौता किया। कुछ दिनों तक तो ओटेन शांत रहा, परंतु एक दिन वह अपनी सीमा पार कर गया। ओटेन ने एक छात्र से प्रश्न पूछा पर छात्र उत्तर नहीं दे सका। इस साधारण-सी बात पर ओटेन ने उसे गालियां देना आरम्भ कर दिया-यू ब्लैक मंकी... इंडियन...यह सुनकर सुभाष को मर्मान्तक पीड़ा हुई। एक भारतवासी की तुलना काले बंदर से। इतना तिरस्कार!

देशभक्त सुभाष उठ खड़े हुए और बोले - प्रोफेसर साहब! आपको ऐसे असभ्य शब्दों का प्रयोग नहीं करना चाहिए। ओटेन और अधिक भड़क उठा और चिल्ला कर बोला-यू ब्लडी! तू बैठता है कि नहीं। सुभाष चन्द्र सीधे ओटेन के पास गए और उसके गाल पर एक जोरदार थप्पड़ देकर बोले-तुम अपने आपको क्या समझते हो प्रोफेसर? तुम किस मुंह से गाली बकते हो। जबान खींच लूंगा।" इस घटना की खबर शीघ्र ही चारों तरफ फैल गई।
पर यह एक अंग्रेज अध्यापक को ही नहीं बल्कि ब्रिटिश सरकार को भी दिया गया एक करारा तमाचा था कि भारतीयों के स्वाभिमान के साथ खेलने का क्या परिणाम होता है।

अंग्रेज भारत छोड़कर चले गए और भारत स्वतंत्र हो गया परन्तु भारतीय संस्कृति को तिरस्कृत व अपमानित करने के ऐसे घृणित कार्य अभी भी बन्द नहीं हुए हैं। आज भी मदरसों में, कॉन्वेंट स्कूलों में भारतीय संस्कृति को निम्न कोटि का दर्शाया जाता है। बात इतनी भी होती तो समझा आता, आज तो कालेजों में देश से आजादी लेने, लड़कर आजादी लेने के नारे लगाए जाते हैं, देश विरोधी कार्य किए जाते हैं। हमें भी अपने अन्दर सुभाष चन्द्र बोस जैसा आत्मबल, देश भक्ति व निर्भयता लानी चाहिए, जिससे हम इन सांस्कृतिक आक्रमणों से अपनी भारतीय संस्कृति को बचा सकें।

प्रथम पृष्ठ का शेष

पीएफआई जैसे देश विरोधी संगठनों का एजेंडा आगे बढ़ाये। बरहाल ये तो सब चोरों के कारनामे हैं लेकिन इन चोरों की माँ कौन है इनकी माँ है अमेजन जैसी कंपनी क्योंकि इसने अपने इरादे बहुत पहले जाहिर कर दिए थे, कभी अमेजन अपनी वेबसाइट पर ऐसे पांयदान फुटमैट बेचती है, जिनपर शिव और गणेश की तस्वीर छपी हुई होती है। कभी भारतीय ध्वज के अलावा गणेश जी और आध्यात्मिक प्रतीक ओम् के चित्रों के साथ डोरमैट और बाथरूम कालीन अपनी वेबसाइट पर बेचती पाई जाती है, इसके अलावा प्लेटफॉर्म पर देवी-देवताओं के चित्र वाले इनरवियर तक बेचे जाने की बात सामने आ चुकी है।

लोग जब इन सबका विरोध करते है ऐमेजॉन डॉट कॉम हिन्दू देवी-देवताओं की तस्वीरों से बनी महिलाओं के लिए टांगों और हिप्स में देवी देवताओं से छपी प्रिंटेड लेंगिंग को बाजार में उतार देती है। जब विरोध बढ़ता है बात आगे तक जाती है तो ऐमेजॉन हिन्दू देवी-देवताओं की तस्वीरों वाली टॉयलेट सीट अपनी वेबसाइट पर बेचना शुरू कर देती है। जब इसका भयंकर तौर पर विरोध किया जाता है तो कुछ दिन बाद अमेजॉन अपनी साइट पर तिरंगे की तस्वीर वाले डोरमैट की बिक्री शुरू कर देती है। जैसे ही इसकी शिकायत तत्कालीन विदेश मंत्री सुषमा स्वराज जी को मिलती है तो अमेजॉन के अधिकारियों को वीजा नहीं दिये जाने और पूर्व में जिन्हें वीजा जारी हुआ उसे भी रद्द करने की चेतावनी दे दी जाती है तब यह लोग तिरंगे वाली डोरमैट हटाते हैं।

लेकिन इसी दौरान अचानक अमेजॉन पर गाँधी जी की तस्वीर वाली सेंडल्स बेचना शुरू कर देती है। इससे पहले आस्ट्रेलिया में मां लक्ष्मी की बिकनी पर छपी तस्वीरों के साथ माडल दिखाई देती है तो फिर एक नाटक में हिंदुओं में सर्वप्रथम पूज्यनीय भगवान गणेश जी का मजाक उड़ाया जाता है। एक जिसमें भगवान गणेश से हिटलर की गुप्तचर सेवा द्वारा पूछताछ करते दिखाया जाता है।

हम विरोध करते है क्योंकि हमारे यहाँ तालिबान हिन्दू तो है नहीं, हम तो सर्व धर्म समभाव और सेकुलर कीड़ा काटे लोग हैं तो कम्पनी भगवानों की तस्वीरों वाले जूते बाजार में उतार देती है। लोग विरोध करते हैं कुछ दिन बाद फिर अचानक ऑस्ट्रेलिया में बीयर की बोतलों पर लक्ष्मी-गणेश की तस्वीर छाप देती है। हम फिर विरोध करते हैं लेकिन हम अपनी गलतियों से कभी नहीं सीखते हैं और बार-बार इनका भरोसा कर लेते हैं। तो अचानक अश्लीलता को साहित्य के आईने में ढालने की कोशिशें की जाती हैं, और अमेजॉन किंडल पर हिन्दू महिलाओं और मुस्लिम पुरुषों की सेक्स स्टोरीज पर मनगढ़ंत कहानियों पर किताबें बेचीं जानी शुरू हो जाती है। और इस मजहबी साजिश में हिन्दू महिलाओं को शिकार के तौर पर देखा जाता है या कहो उन्हें शिकार बनाया जाता है, बेहद गन्दा चित्रण इनमें होता है कि कोई पढ़कर खुद को शर्मिंदा महसूस करेगा।

इन सबके बावजूद अगर लोग अब भी एमेजॉन को एक कम्पनी समझते है तो भूल है क्योंकि यह सिर्फ हिन्दुओं की भावनाओं को ठेस पहुंचाने के लिए एमेजन डॉट कॉम नहीं बल्कि मजहबी डॉट कॉम है। तो इनसे निपटने के लिए तैमूर के बाप का विरोध करना जरुरी नहीं है वो तो हर जगह यही करेगा उसका मजहब ही यही है हमें तो अपना तरीका खोजना होगा कम से कम इतना सबक तो सिखा सकते है इसे बुरी रेटिंग दी जाए। साथ ही इसका एप अनइंस्टॉल कर दिया जाए। इस वेबसाइट से सामान ना खरीदा जाये बल्कि अन्य पोर्टलों का इस्तेमाल किया जाये ताकि इन्हें सबक मिले क्योंकि जब हम एक होकर ऐसे काम करेंगे। तो ना तैमूर का अब्बा वेबसीरिज बनाएगा अगर बना भी लेगा तो शायद ही कोई ओटीटी प्लेटफार्म पब्लिश करेगा क्योंकि उसे सनातन धर्म की एकता और ताकत का एहसास हो जायेगा। विरोध तांडव का नहीं विरोध अमेजन का कीजिये।

- सम्पादक

अमेरिका में विश्व का सबसे पुराना लोकतन्त्र?

क्या अमेरिका में गृह युद्ध शुरु होगा?

शायद देर-सबेर शायद कोरोना का सफल टीका बन जाएगा, लेकिन जिस ट्रंप के चुनाव हारने के बाद भी खुद को अमेरिकी राष्ट्रपति माने बैठे हैं उस जिद का टीका शायद दुनिया को कोई वैज्ञानिक ना बना पाए। हाल ही में अमेरिकी संसद के इस सत्र में नवनिर्वाचित राष्ट्रपति जो बाइडन की जीत को प्रमाणित किया जाना था लेकिन ट्रंप अपनी बात पर अड़े हैं कि चुनावों में धांधली हुई है। ये बिलकुल ऐसे जैसे हमारे यहाँ कुछ विपक्षी दल जीत जायें तो ठीक वरना ईवीएम मशीन पर ठीकरा फोड़ दिया जाता है।

ट्रम्प की इस जिद का नतीजा ये निकला की अमेरिका में ट्रंप समर्थकों और पुलिस के बीच हिंसक झड़प हुई, अमेरिका के लोकतंत्र के 220 सालों में इस इमारत पर गोलीबारी भी हुई, बम भी फोड़े गए, लेकिन इतनी भारी मात्रा में हल्ला मचाती भीड़, संसद के खंबो पर चढ़ती, हिंसा मचाती कभी पहले नहीं देखी।

खैर प्रधानमंत्री मोदी ने अपने ट्वीट से इशारा कर दिया की अब उनकी और ट्रम्प की दोस्ती कोई मायने नहीं रखती और भारत अमेरिका की नई सरकार के साथ काम करने को तैयार हैं न कि ट्रम्प के अड़ियल रुख के साथ। मोदी जी ने लिख दिया कि लोकतांत्रिक प्रक्रिया को गैरकानूनी प्रदर्शनों से बदलने की अनुमति नहीं दी जा सकती, सत्ता का हस्तांतरण शांतिपूर्ण तरीके से होना चाहिए।

मसलन ट्रम्प जो आज कर रहा है वह हमारे यहाँ करीब 45 साल पहले हो चुका है। एक समय श्रीमती इंदिरा गाँधी जी भी ऐसी ही जिद पर अड़ गयी थी, इंदिरा पर आरोप था कि उसने धांधली कर चुनाव जीता है तो 12 जून 1975 को सख्त जज माने जाने वाले जस्टिस जगमोहन लाल सिन्हा ने उनके रायबरेली से सांसद के रूप में चुनाव को अवैध करार दे दिया। और अगले छह साल तक उनके कोई भी चुनाव लड़ने पर रोक लगा दी। ऐसी स्थिति में इंदिरा गांधी के पास राज्यसभा में जाने का रास्ता भी नहीं बचा और उनके प्रधानमंत्री पद छोड़ने का वक्त आ गया तो इंदिरा जी ने 25 जून, 1975 की आधी रात से आपातकाल लागू कर दिया।

खैर अमेरिका में ट्रम्प ऐसा कुछ तो नहीं कर पाया लेकिन जो उससे हो सकता था वो किया। ट्रम्प के समर्थक अमेरिका के लोकतंत्र का प्रतीक कही जाने वाली कैपिटल हिल बिल्डिंग में घुस गये। हिंसा में एक महिला की मौत हो गई, भीड़ इतनी ज्यादा थी कि पुलिसकर्मी कम पड़ गए, बताया जा रहा है कि उस समय संसद में इलेक्टोरल वोटों को गिनने की प्रक्रिया चल रही थी। इस हिंसा के बाद संसद के दोनों ही सदनों को लॉकडाउन कर दिया गया। उप राष्ट्ररपति माइक पेंस और अन्य सांसदों को सुरक्षित तरीके से निकाला गया।

अब ऐसी स्थिति में माना जा रहा है कि अमेरिका में कुछ भी हो सकता है। डोनाल्ड ट्रम्प के काम देखकर अंदेशा होने लगा है कि शायद वे अमेरिका में नई सरकार का तख्तापलट कर देंगे। हालांकि जो बाइडेन ने इस पर कोई बयान नहीं दिया है वहीं दूसरी तरफ ट्रम्प ने हार नहीं मानने का ऐलान किया है। अभी राष्ट्रपति के तौर पर डोनाल्ड ट्रंप के कार्यकाल के आखिरी दो सप्ताह शेष हैं। ऐसे में जो होना है अगले दस पंद्रह दिनों में ही होना है। प्रमुख डेमोक्रेटिक पार्टी के नेता बर्नी सैंडर्स ने कहा कि एक ऐसा राष्ट्रपति जो 70 लाख वोटों से हार गया और झूठ की आड़ में अब गृह युद्ध की तैयारी कर रहा है।

इस बात का कयास इस बात से लगाया जा रहा है कि डोनाल्ड ट्रम्प ने हाल ही में सेना में अचानक कुछ ऐसे बदलाव किये थे जो अकारण नहीं नजर आते। ट्रंप ने पेंटागन में बदलाव करते हुए रक्षामंत्री मार्क एस्पर को हटाया और फिर अपने तीन विश्वस्त अधिकारियों की अमेरिकी सेना में अहम पदों पर नियक्ति कर दी। और ये बदलाव अमेरिका की सेना में ट्रम्प ने उस समय किये हैं जब नई सरकार बनने वाली है।

इसके अलावा बताया जा रहा है कि चुनाव के पहले तीन चार महीनों से अमेरिका में हथियारों की खरीद-बिक्री बढ़ गई थी। ऐसा पहले कभी नहीं हुआ था इस कारण इस स्थिति को देखते हुए आशंकाएं जताई जा रही हैं कि ट्रम्प को अनुमान था कि वे जीत नहीं पाएंगे इसलिए उनके समर्थकों ने परिणाम आने के बाद अमेरिका में दंगों की स्थिति पैदा कर खून-खराबे की स्थिति पैदा हो सकती है।

अब ये चिंता साफ नजर आ रही है कि राष्ट्रपति ट्रम्प और उनकी पार्टी के नेता सत्ता में बने रहने के लिए हर सम्भव प्रयत्न कर सकते हैं। पहले ही अमेरिका के विदेश मंत्री माइक पोम्पियो ने भी बयान दे दिया था ट्रम्प कि प्रशासन के दूसरे कार्यकाल के लिए सत्ता का हस्तांतरण आसानी से नहीं होगा।

यदि कहा जाये तो ट्रम्प अमेरिकी राजनीति का ऐसा ही एक निष्ठुर, बेपरवाह चरित्र है जो अजीब किस्म का दिमाग लिए हुए है वह अपने पैसों और शक्ति के बल पर वहाँ की राजनीति के अन्य सभी लोगों को अपने पैरों की जूती मानता है। वह अमेरिकी राजनीति के पारंपरिक रूप को पटखनी देने की जिस प्रकार की हुंकारें भरता है, उससे उसके समर्थकों को कुछ वैसा ही आनंद मिलता है। जैसा डब्लयू. डब्ल्यू.एफ. की कुश्तियों में पहलवानों की थोथी चिंघाड़ों पर लोग उत्तेजना में पागल हो जाते हैं ट्रंप खुद ऐसी कुश्तियों के आयोजन कराते रहे हैं, तो ट्रम्प इन थोथी चिंघाड़ों का अर्थ अच्छे से समझते हैं।

हाँ, कुछ भारतीय वामपंथी समाचार पत्र और पोर्टल कह रहे हैं कि ऐसा अमेरिका में पहली बार हुआ है तो यह गलत है इमारत पर कई बार बमबारी की जा चुकी है, गोलीकांड भी हुए हैं, एक बार तो एक नेता ने दूसरे को लगभग मार भी डाला था। सबसे प्रसिद्ध वाकया 1950 में हुआ था, जब चार प्यूर्टो रिकान राष्ट्रवादियों ने सदन की विजिटर गैलरी से लगभग 30 गोलियां चलाई थी। जिसमें कई लोग घायल हुए थे। 1915 में, एक जर्मन व्यक्ति ने सीनेट के स्वागत कक्ष में डायनामाइट की तीन छड़ें लगाई थी। इसके अलावा 1971 में लाओस पर अमेरिकी बमबारी का विरोध करने के लिए एक विस्फोटक स्थापित किया गया था।

- शेष पृष्ठ 4 पर

संस्कृत वाक्य प्रबोध

गुरु शिष्य वार्तालाप प्रकरणम्

मानव समाज के ऊपर महर्षि दयानन्द जी के अनगिनत उपकारों में ग्रंथ रचना एक महान उपकार है। महर्षि द्वारा कालजयी अमरग्रंथ सत्यार्थ प्रकाश, ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका, संस्कार विधि इत्यादि 2 दर्जन से ज्यादा सारगर्भित रचनाएं हैं। मानव कल्याण हेतु यहां प्रस्तुत है संस्कृत वाक्य प्रबोध नामक पुस्तक से (गुरु शिष्य वार्तालाप प्रकरणम्)। आर्यसन्देश के आगामी अंकों में भी हम इस स्तम्भ को नियमित रूप से प्रकाशित करने का प्रयास करेंगे। - सम्पादक

	संस्कृत	हिन्दी
1.	भो: शिष्य उत्तिष्ठ प्रात:कालो जात:।	हे शिष्य! उठ सवेरा हुआ।
2.	उत्तिष्ठामि।	उठता हूँ।
3.	अन्ये सर्वे विद्यार्थिन उत्थिता न वा?	और सब विद्यार्थी उठे या नहीं?
4.	अधुना तु नोत्थिता: खलु।	अभी तो नहीं उठे हैं।
5.	तानपि सर्वानुत्थापय।	उन सब को भी उठा दें।
6.	सर्व उत्थापिता:।	सब उठा दिये।
7.	सम्प्रत्यस्माभि: किं कर्त्तव्यम्?	इस समय हमको क्या करना चाहिये?
8.	आवश्यकं शौचादिकं कृत्वा सन्ध्या वन्दनम्।	आवश्यक शरीर शुद्धि करके सन्ध्योपासना।
9.	आवश्यकं कृत्वा सन्ध्योपासिताऽत: परमस्माभि: किं करणीयम्?	आवश्यक कर्म करके सन्ध्योपासना कर लिया, इसके आगे हमको क्या करना चाहिए?
10.	अग्निहोत्रं विधाय पठत।	अग्निहोत्र करके पढ़ो।
11.	पूर्वं किं पठनीयम्?	पहिले क्या पढ़ना चाहिये?
12.	वर्णोच्चारणशिक्षामधीध्वम्।	वर्णोच्चारण शिक्षा को पढ़ो।
13.	पश्चात्किमध्येतव्यम्?	पीछे क्या पढ़ना चाहिये?
14.	किंचित्संस्कृतोक्तिबोध: क्रियताम्।	कुछ संस्कृत बोलने का ज्ञान किया जाय।
15.	पुन: किमभ्यसनीयम्?	फिर किसका अभ्यास करना चाहिये?
16.	यथायोग्यव्यवहारानुष्ठानाय प्रयतध्वम्।	यथोचित व्यवहार करने के लिए प्रयत्न करो।
17.	कुतोऽनुचितव्यवहारकर्तुर्विद्यैव न जायते।	क्योंकि उलटे व्यवहार करने वाले को विद्या ही नहीं होती।
18.	को विद्वान् भवितुमर्हति?	कौन मनुष्य विद्वान् होने के योग्य होता है?
19.	य: सदाचारी प्राज्ञ: पुरुषार्थी भवेत्।	जो सत्याचरणशील, बुद्धिमान्, पुरुषार्थी हो।
20.	कीदृशादाचार्यादधीत्य पण्डितो भवितुं शक्नोति?	कैसे आचार्य से पढ़कर पण्डित हो सकता है?
21.	अनूचानत:।	पूर्ण विद्यावान् वक्ता से।
22.	अथ किमध्यापयिष्यते भवता?	अब आप इसके अनन्तर हमको क्या पढ़ाएंगे?

क्रमश: - साभार :- संस्कृत वाक्य प्रबोध (प्रकाशित-दिल्ली संस्कृत अकादमी)

प्रेरक प्रसंग

जब गुलबर्गा पर आर्यों का आक्रमण हुआ

देश-विभाजन से पूर्व गुलबर्गा में एक ऐतिहासिक आर्य महासम्मेलन हुआ था। निजामी सरकार आर्यो का विराट् रूप देखकर थर्रा उठी। आर्यो पर आक्रमण करवाया गया। आर्य नेताओं को बुलाया गया। भाई वंशीलालजी ने पण्डित विनायक रावजी को कहा भी कि दाल में कुछ काला है। आप थाने में मत जाएँ। राव साहब ने भाईजी का सुझाव न माना। पण्डित नरेन्द्रजी, पडित गणपत शास्त्री आदि कलेक्टर के यहाँ पहुँचे तो वहाँ निजाम की पुलिस ने आर्यनेताओं की भरपेट पिटाई की। पण्डित नरेन्द्रजी की तो टाँग ही तोड़ दी गई।

जब इन नेताओं को कलेक्टर का सन्देश पहुँचा, उस समय श्री भाई वंशीलालजी ने इन्हें बार-बार रोका कि वहाँ न जाएँ। यह कोई षड्यन्त्र है। इधर ये तीन महापुरुष कलेक्टर के पास गये, उधर भाई वंशीलालजी ने साथियों से कहा कि चलो यहाँ से निकलकर शोलापुर की ओर चलें। निजाम राज्य की सीमा में रहना ठीक नहीं। पण्डाल से रेलवे स्टेशन बहुत दूर था। कैसे निकलें? मार्ग में मुसलमान देख लेंगे तो निहत्थे आर्य लोगों को मार देंगे।

भाईजी ने कहा- ''मुसलमानी पायजामा पहनकर निडरता से आर्य लोग मुसलमानी मुहल्लों से होते हुए स्टेशन पर पहुँच गये और वहाँ से अंग्रेजी इलाके में पहुँच गये। यह घटना मुझे भाईजी के साथ गुलबर्गा से निकलनेवाले एक आर्यवीर ने बताई थी और यह भी कहा कि यदि हम यहाँ से न निकलते तो भाईजी पकड़े जाते और हमारी भी पिटाई होती।

- प्रा. राजेन्द्र जिज्ञासु

साभार :

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी

तड़पवाले, तड़पाती जिनकी कहानी **: पुस्तक वैदिक प्रकाशन, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली में उपलब्ध है। पुस्तक प्राप्ति हेतु आज ही अपना आदेश मो. नं. 9540040339 पर प्रेषित करें।**

स्वास्थ्य रक्षा

नाड़ी विज्ञान : शारीरिक व्याधियों या रोगों में नाड़ी की गति की पहिचान

गतांक से आगे -

....सन्निपात ज्वर के उत्पन्न होने के पूर्व सभी प्रकार की नाड़ियों की गति प्रकट होती है। अर्थात् जौक तथा सांप की तरह टेढ़ी-मेढ़ी या कौवे की तरह फुदकती हुई तथा कभी हंस तथा मोर की तरह स्थिर मन्द एवं लवा तीतर आदि की तरह तिरछी गति से चलती है। ज्वर का प्रकोप होने पर धमनी या नाड़ी उष्ण तथा तेज गति से चलती है। ज्वर में पित्त का प्रकोप होता है और पित्त के प्रकोप से नाड़ी उष्ण तथा तीव्र गति वाली होती है।....

ज्वर के पूर्वरूप में नाड़ी गति- ज्वर से पहले अङ्गग्रह शरीर में फूटन एवं अकड़न होती है। उस समय नाड़ी मन्द गति में कूद-कूदकर चलती है। यदि ज्वर के साथ दाह भी हो तो प्रबल वेग से कूद-कूदकर तेजी से मेंढ़क आदि की तरह कूद-कूदकर चलती है, अर्थात् ज्वर आने से पूर्व इस प्रकार की गति होती है।

सन्निपात रूपेण के पूर्व रूप में नाड़ी की गति- सन्निपात ज्वर के उत्पन्न होने के पूर्व सभी प्रकार की नाड़ियों की गति प्रकट होती है। अर्थात् जौक तथा सांप की तरह टेढ़ी-मेढ़ी या कौवे की तरह फुदकती हुई तथा कभी हंस तथा मोर की तरह स्थिर मन्द एवं लवा तीतर आदि की तरह तिरछी गति से चलती है।

ज्वर का प्रकोप होने पर धमनी या नाड़ी उष्ण तथा तेज गति से चलती है। ज्वर में पित्त का प्रकोप होता है और पित्त के प्रकोप से नाड़ी उष्ण तथा तीव्र गति वाली होती है। कफ ज्वर तथा वात ज्वर में क्रमश कफ नाड़ी की गति तथा वात नाड़ी की गति होती है।

वातोल्वण वात ज्वर में नाड़ी की गति- वात प्रकोप से होने वाले ज्वर में सामान्यत: ज्वर की नाड़ी उष्ण एवं तेजी के साथ-साथ टेढ़ी तथा तिरछी गति से चलती है।

रमण काल के बाद नाड़ी की गति- स्त्री प्रसंग या मैथुन के बाद नाड़ी की गति शेष रात तथा प्रात:काल तक दीपक की ज्वाला की तरह गर्म होती है। ज्वर में उष्ण एवं बेगवती नाड़ी होती है। इसमें दीपशिखा की तरह स्थिर तथा गर्म होती है। यही ज्वर तथा स्त्री प्रसंग या मैथुन करने के बाद गति में भेद है।

वात की साम्यावस्था में नाड़ी की गति- वात की स्वाभाविक अवस्था में नाड़ी की गति मृदु, सूक्ष्म स्थित तथा मन्द होती है और रात के प्रकोप में नाड़ी की गति स्थूल, कठिन एवं शीघ्रगामी स्पन्दन करने वाली होती है। वात प्रकोप के कुछ समय बाद सायंकाल, भोजन की जीर्णावस्था ग्रीष्म ऋतु आदि तथा अन्य वात प्रकोपक कारणों से वात प्रकुपित होने पर नाड़ी की गति मोटी, कड़ी तथा जल्दी-जल्दी चलने वाली होती है। स्वास्थावस्था में सूक्ष्म, स्थिर एवं मन्द गति वाली होती है। वात के संचय काल में भी नाड़ी वात की तरह चलती है।

पित्त ज्वर- पित्त ज्वर में नाड़ी दोषों से भरी हुई सीधी रेखा में अनामिका से तर्जनी तक तथा जल्दी-जल्दी स्पन्दन करती है। नाड़ी के कठिन होने से जल्दी-जल्दी धक्का देती है। चंचलता पूर्वक चलती है, अर्थात् मालूम पड़ता है कि चमड़े को फोड़कर नाड़ी बाहर निकल जाना चाहती है। मलाजीर्ण होने पर नाड़ी अत्यधिक स्पन्दन करने वाली होती है। तात्पर्य यह है कि मल सामपित्त जैसे-जैसे पक्व हो जाता है, वैसे-वैसे नाड़ी काठिन्यादि दोष छोड़कर बार-बार फुर्तीला एवं हल्कापन लिए हुए चलती है।

श्लेष्मा या कुफोल्वण नाड़ी- कफ ज्वर में नाड़ी की गति संचय-काल या प्रकोप काल में कमल के सूत के समान पतली, मन्द तथा शीतल होती है। अर्थात् कफ के प्रकोप होने पर नाड़ी कमल तन्तु के समान होकर मन्द गति से स्पर्श में शीतल चलती है।

वात पित्तजा नाड़ी- वात पित्तजा नाड़ी की गति वात पित्तजन्य ज्वर में नाड़ी की गति चंचल, तरल ढ़ीली-ढ़ीली या मोटी तथा कठिन सी होकर चलती है। दोनों के साथ-साथ प्रकोप होने से वात की वक्रगति तथा पित्त की सरल गति दोनों ही मध्य गति के अनुसार चलती है। अर्थात् न तो अधिक टेढ़ी-मेढ़ी ही रहती है और न बिल्कुल सरल ही रहती है। बल्कि कुछ टेढ़ी और कुछ सरल होकर चंचलता, कठिनता तथा स्थूलता लिए हुए चलती है।

वातज श्लेष्मिकी नाड़ी- वात श्लेष्मिक ज्वर में दोनों दोषों के समान रूप में प्रकुपित होने पर नाड़ी गर्म होती हुई मन्द गति से हंस तथा मोर की तरह गति वाली चलती है। यदि ज्वर में कफ का प्रकोप कम तथा वात का प्रकोप अधिक हुआ हो तो नाड़ी निरन्तर खर या तेज तथा रुक्ष होकर चलती है।

रुक्ष वातजा नाड़ी- रूक्ष पदार्थो के सेवन करने से प्रकुपित वात में नाड़ी पिण्ड के समान गीली या गांठ की तरह कर्कश प्रतीत होती है।

पित्त श्लेष्मजा नाड़ी- पित्त कफ जन्य प्रकोप से उत्पन्न ज्वर में नाड़ी सूक्ष्म, पतली, स्पर्श में शीतल तथा स्थिर चंचलता रहित होती है। इसमें पैत्तिक नाड़ी के लक्षण का विशेष प्रभाव नहीं पड़ता, क्योंकि पित्त, कफ भिभूत होता है। अर्थात् मिश्रण होने से दोनों नाड़ी की गतियों में समानता आ जाती है। अत: तेजी से अधिक कूदकर कौवे एवं मेंढ़क की तरह होती है।

रक्तपूर्ण मलवती नाड़ी-ज्वर में रक्त एवं मल से पूर्ण नाड़ी के लक्षण-

ज्वरावस्था में यदि नाड़ी मध्यमा अंगुली के नीचे गर्म होकर चले तो समझना चाहिए कि वातादि दोष रक्त के साथ मिलकर पूर्ण है। यहां नाड़ी दोष पूर्ण होने के कारण रक्त का भी पित्त के सदृश कार्य होने से तेज गति वाली होती है।

बाल बोध

आओ चलें, सफलता की ओर

गतांक से आगे -

....जिन्दगी में असफलता उतनी ही स्वाभाविक और सहज है जैसे फूलों संग कांटे। वे कांटे भी पुष्पों के सौन्दर्य को द्विगुणित करते हैं यदि हमारे पास देखने की दृष्टि हो तो दु:ख में जो निराशा मिलती है, निरुत्साह मिलता है, उसीसे युद्ध करना पड़ता है पुन: असफलता अपने में कोई चीज नहीं। हमें अपने हालातों के शिकार होने के बजाए ऊपर उठना चाहिए और हालातों पर विजय प्राप्ति के लिए हर सम्भव प्रयास करने चाहिए। जो आपको असफलता से सीख मिले उसे अपनी डायरी में नोट कर लें। उन्हीं सीखों के सहारे मंजिल का रास्ता खोजें। आज नहीं तो कल सफलता आपके कदमों में होगी।....

युवा कार्टूनिस्ट वाल्ट डिस्नी के कार्टूनों को बहुत संपादकों ने घटिया बताते हुए लौटा दिया। एक बार चर्च अधिकारी ने उन्हें कार्टून बनाने का काम दिया। वाल्ट डिस्नी चर्च के पास चूहों से भरे एक छोटे से कमरे में बैठे अपना काम कर रहे थे। एक नन्हें चूहे को देखकर उसे कुछ नया करने की सूझी और वहीं से मिकी माऊस की शुरुआत हुई।

एक दिन ऊंचा सुनने वाला चार साल का बच्चा अपनी टीचर के द्वारा दिए गए नोट के साथ घर पहुंचा। उस नोट पर लिखा था, "आपका टामी इतना बेवकूफ है कि कुछ सीख नहीं सकता, इसे स्कूल से निकाल लीजिए। उसकी मां ने नोट पढ़कर उत्तर भेजा, "मेरा टामी बेवकूफ नहीं है मैं उसे खुद पढाऊंगी और यही टामी बड़ा होकर महान् वैज्ञानिक थामस एडीसन बना। थामस ने सिर्फ तीन महीने स्कूल की पढ़ाई की थी।

हेनरी फार्ड ने जो पहली कार बनाई थी उसमें रिवर्स प्रति डालना ही भूल गये थे। लोगों ने उनके इस उत्पादन के प्रति बड़ी निराशा प्रकट की। उन्होंने उत्साह नहीं खोया और आप आज जानते हैं कि हेनरी फोर्ड ने अपने उत्पादनों को किस मुकाम तक पहुंचाया।

बाह्य रूप से ऐसा लगता है कि सफल व्यक्तियों को कामयाबी भाग्य से मिली है पर उनकी संघर्ष की कहानी और असफलताओं में धैर्य की कथा से कम लोग ही परिचित होते हैं, वे हर बार गिरकर उठते हैं और ठोकरों से शिक्षा लेकर आगे बढ़ते हैं।

1914 में जब थामस एडीसन 67 वर्ष के थे तो उनकी फैक्टरी में आग लग गई। जिसमें लाखों डालर का सामान जलकर खाक हो गया। उस कम्पनी का बीमा बहुत कम था। एडीसन भी अब बूढे हो चुके थे और जीवन भर की मेहनत की कमाई अग्निसात होते देखकर बोले जो होता है, अच्छे के लिए होता है। हमारी सारी कमियां इसमें जलकर राख हो गई। ईश्वर की कृपा से हमें नए सिरे से कार्य करने के अवसर उपलब्ध हुए हैं। इतनी बड़ी हृदयविदारक घटना के सिर्फ तीन हफ्ते बाद ही उन्होंने फोनोग्राम का अविष्कार किया था।

जिन्दगी में असफलता उतनी ही स्वाभाविक और सहज है जैसे फूलों संग कांटे। वे कांटे भी पुष्पों के सौन्दर्य को द्विगुणित करते हैं यदि हमारे पास देखने की दृष्टि हो तो दु:ख में जो निराशा मिलती है, निरुत्साह मिलता है, उसीसे युद्ध करना पड़ता है पुन: असफलता अपने में कोई चीज नहीं। हमें अपने हालातों के शिकार होने के बजाए ऊपर उठना चाहिए और हालातों पर विजय प्राप्ति के लिए हर सम्भव प्रयास करने चाहिए। जो आपको असफलता से सीख मिले उसे अपनी डायरी में नोट कर लें। उन्हीं सीखों के सहारे मंजिल का रास्ता खोजें। आज नहीं तो कल सफलता आपके कदमों में होगी।

पृष्ठ 3 का शेष

क्या अमेरिका में गृह युद्ध .....

कैपिटोल पर सबसे घातक हमला 1998 में हुआ। जब एक व्यक्ति ने एक चौकी पर गोलीबारी की और दो कैपिटोल पुलिस अधिकारियों की हत्या कर दी थी।

खैर अब यूएस कैपिटल में हिंसा के दौरान चार लोगों की मौत हो चुकी है इन चार लोगों में से एक महिला की मौत पुलिस की गोली लगने के कारण हुई, जबकि अन्य तीन लोग 'मेडिकल इमरजेंसी' के कारण मरे हैं। वॉशिंगटन में पुलिस अब तक 52 लोगों को गिरफ्तार कर चुकी है। कैपिटल बिल्डिंग में हुई हिंसा के बाद राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप की बेटी इवांका ट्रंप हमला करने वालों को देशभक्त कहकर निशाने पर आ गई है। हालाँकि उसने अपना ट्वीट डिलीट कर दिया है। खैर अब अमेरिका में कुछ भी हो ट्रंप तख्ता पलट करे या व्हाइट हाउस छोड़ दे पर डोनाल्ड ट्रंप का बड़बोलापन उनके जाने के लंबे वक्त के बाद भी महसूस किया जाएगा। यानि ट्रंपिज्म ट्रंप से ज्यादा समय तक टिके रह सकता है. अभी ट्रंप के पास 20 जनवरी आज तक समय है कुछ भी हो सकता है, लेकिन दुनिया को लोकतंत्र का लेक्चर देने वाले अमेरिकी अपने घर को नही संभाल पाए और झटके में अमेरिका का सोमालिया बना दिया।

72वें गणतन्त्र दिवस (26 जनवरी) पर विशेष

आओ! इस गणतन्त्र पर हम राष्ट्र रक्षा का लें – संकल्प

गणतन्त्र दिवस केवल अवकाश का दिन नहीं है, यह तो राष्ट्र रक्षा का संकल्प दिवस है, राष्ट्रोत्थान का प्रेरणा पर्व है, राष्ट्र भक्ति का सबसे बड़ा उत्सव है। भारत राष्ट्र की उदात्त संस्कृति, सभ्यता, आचार-संहिता, भाषा, वेश, शील की सुरक्षा के प्रति देशवासियों का अखण्ड अनुराग होना ही चाहिए। जहां के नागरिक इन कसौटियों पर सही उतरते हैं, वे ही वास्तव में राष्ट्रीय कहे जा सकते हैं और जिस राष्ट्र के नागरिक किसी भी मान, पद या धन के लोभ में आकर इन्हें भुला देते हैं वे अराष्ट्रिय कहे जाते हैं। ऐसे ही नागरिकों की वृत्ति देशद्रोही कही जाती है। जिसका इस समय भारत में अधिकाधिक प्रकोप बढ़ता जा रहा है। जबकि भारत की राष्ट्रीयता का प्रचण्ड स्वरूप हमें वेदों में देखने को मिलता है। इसके भूखण्ड को केवल पृथ्वी का टुकड़ा नहीं माना गया अपितु इसे माता कहा गया है-

माता भूमिः पुत्रो अहं पृथिव्याः।

अथर्ववेद 12/1/12

भूमे मातर्निधेहि मा।

अथर्ववेद 12/1/63

गिरि, कानन, नदी, झरने उस भूमि माता के केश, शिर, नस, नाड़ी, मांस-मज्जा एवं रुधिर के तुल्य समझे गए हैं। उसी राष्ट्र में राष्ट्र के नायकों के मन में अपनी मातृभूमि के लिए बंजर भूमि आदि की भावना का होना नैतिकता के पतन की पराकाष्ठा का परिचायक है।

इनमें इस भावना को जागृत करने में विदेशी कुटिल इतिहासकारों का बड़ा योगदान रहा है। जिससे प्रभावित होकर

अपने को पढ़े-लिखे मानने वाले प्रगतिशील विचारक अपने देश के पूर्व महापुरुषों को अनैतिहासिक भ्रान्त एवं छली कहने में अपना गौरव अनुभव करते हैं तथा सत्य-अहिंसा का पुजारी कहलाने की लोकैषणा से ग्रस्त होकर अपने महापुरुष को अन्य राष्ट्र के महापुरुषों से हेय समझते हैं। पंचशील का ढोंग रचकर तिब्बत सहित मानसरोवर कैलाश को अन्य राष्ट्रों को देने में अपनी उदारता एवं राष्ट्रीय नागरिकों का अपमान करने में अपनी पंथ-निरपेक्षता का स्वांग रचते हुए अपने को कृतकृत्य मानते हैं।

यही नहीं अब व्यापार की उदार नीति के नाम पर अतिरिक्त सुविधा-राशि लेकर बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के स्वागत एवं स्वदेशी भावना को कट्टरवाद राष्ट्रघातक बताकर राष्ट्रोत्थान के मूलाधार राष्ट्रीय व्यापार का विनाश करते जा रहे हैं। वहीं इनके द्वारा पर्यटन विकास के नाम पर विदेशी नागरिकों को आमंत्रित कर उन्मुक्त यौनाचार को बढ़ावा दे रहे हैं। भावी नागरिकों के विकास के मेरुदण्ड चरित्र को सर्वथा तोड़कर उसे प्राणहीन बनाने की विदेशियों द्वारा चलाई गई नीतियों का सगर्व पालन किया जा रहा है।

निर्वाचनों के अवसर पर राष्ट्रीय समस्याओं की उपेक्षा कर क्षेत्रीय यहां तक कि जातिगत, व्यक्तिगत, राष्ट्रघाती, क्षुद्र-स्वार्थों को उछाल जनसामान्य को दिग्भ्रमित कर चुनाव जीते जा रहे हैं। समष्टिवाद जो कि किसी भी राष्ट्र का मूलाधार होता है उसे नकार कर व्यष्टिवाद को प्रोत्साहन दिया जा रहा है वह भी अहर्निश समाजवाद का ढोल पीटने वालों के द्वारा।

यही क्यों? राष्ट्रीय महापुरुषों के स्मृति चिन्हों के जीर्णोद्धार की बात को साम्प्रदायिकता मानना तथा सत्ता की अन्धी भूख के वशीभूत हो धर्मनिरपेक्षता के नाम पर किसी विशेष पन्थ, सम्प्रदाय को ही आधार बनाकर उन्हें अन्य नागरिकों से विशेष सुविधा प्रदान कर उनके लिए सर्वोच्च न्यायालय का अपमान तथा संविधान में मनमाना संशोधन एवं परिवर्तन किया जाना आदि तो अब एक साधारण बात हो गई है।

विश्वभाषा के नाम पर विदेशी भाषा को प्रोत्साहन देते हुए राष्ट्रीय भाषा का तिरस्कार कर रहे हैं। अब तो सन्त महात्मा भी इस वृत्ति से अछूते नहीं रहे, अनेक सन्त नामधारी व्यक्ति स्वयं राष्ट्रघातक प्रवृत्तियों को आशीर्वाद, प्रोत्साहन देकर इस ओर उन्मुख एवं लिप्त हो रहे हैं तथा इस वृत्ति वाले लोगों को सहयोग देने के लिए राष्ट्र विरोधी नए संगठनों का निर्माण कर रहे हैं।

स्वतंत्रता के पश्चात् राष्ट्र की सुरक्षा हेतु जिस प्रचण्ड राष्ट्रवाद के प्रचार-प्रसार

- शेष पृष्ठ 8 पर

दिल्ली में स्थान-स्थान पर हो रहे हैं यज्ञ, भजन, प्रवचन एवं वस्त्र वितरण के कार्यक्रम

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सेवा ईकाई 'अखिल भारतीय दयानन्द सेवाश्रम संघ' का सेवा प्रकल्प ''सहयोग'' वस्त्रों की आधारभूत आवश्यकता की पूर्ति व शिक्षा के मूलभूत अधिकार के लक्ष्य की प्राप्ति हेतु प्रयासरत है। पद्मभूषण महाशय धर्मपाल जी की प्रेरणा से अखिल भारतीय दयानंद सेवाश्रम संघ द्वारा संचालित सहयोग एक ऐसी कल्याणकारी दिव्य योजना है, जिससे लाखों लोग लगातार लाभ प्राप्त कर रहे हैं। प्रान्तीय स्तर पर दिल्ली में सहयोग का कार्य दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत किया जा रहा है।

दिनांक 17 जनवरी, 2021 को कमला नेहरू कैंप कीर्ति नगर में आयोजित यज्ञ एवं भजन संध्या के अवसर पर वस्त्र वितरण का कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। यज्ञ में आई मातायें ही नहीं बल्कि वहाँ खड़े पुरुष भी भक्ति में झूमने लगे। शुरुवात में लगा कि कोई यज्ञ में नहीं आएगा, मगर कार्यक्रम शुरू होने के बाद भीड़ जुटती चली गयी। सभी ने तन्मयता से यज्ञ में आहुति दी और गीत गाए। भजनोपदेशकों द्वारा सुंदर गीत गाए गए। जो कार्यक्रम दोपहर में शुरू हुआ था वह देर शाम तक चला क्यूंकि लोग उठना नहीं चाह रहे थे। कार्यक्रम पश्चात् सभी को वस्त्रादि भेंट किये गए। अंधेरा हो जाने के कारण और भीड़ अत्याधिक होने के कारण सभी लोगों को घर-घर जाकर वस्त्रादि भेंट किये गए। यह यज्ञ कार्यक्रम हवन उत्थान जनकल्याण समिति द्वारा कराया गया।

इससे पूर्व 13 जनवरी, 2021 को कृष्णा मार्किट, झिलमिल कॉलोनी में भी यज्ञ एवं वस्त्र वितरण का कार्यक्रम हुआ। यहां सहयोग का पहला कार्यक्रम था और लोग सहयोग से अनभिज्ञ थे, इसलिए लोग यज्ञ में बैठने से झिझक रहे थे। कुछ देर तक तो कोई यज्ञ में नहीं आया मगर कुछ देर बाद आसपास की मातायें व बढ़े बुजुर्ग यज्ञ में सम्मिलित हुए और अपने अपने हिस्से की आहुति सभी ने दी। यज्ञ के प्रमुख यजमान आर्य समाज झिलमिल कॉलोनी के प्रधान थे और इस कार्यक्रम का आयोजन आर्य समाज सूरजमल विहार के अधिकारियों द्वारा किया गया व सभी ने मिलकर कार्यक्रम को सार्थक रूप दिया। कार्यक्रम के अंत में व्यवस्था बनाये रखते हुए सभी को वस्त्रादि भेंट किये।

आपका योगदान - 'सहयोग' के माध्यम से आप इस सेवा का हिस्सा बन सकते हैं। आपके घर में बहुत-सा ऐसा सामान होता है जो आपके काम नहीं आता है किन्तु किसी अन्य के लिए वह बहुत उपयोगी सिद्ध हो सकता है। आप वह सामान हमें दें, हम उसे हर जरूरतमंद तक पहुँचाएंगे।

आप हमें 'वस्त्र, पुस्तकें, खिलौने, जूतें, चप्पल, आदि' सामान दे सकते हैं। आप सामान एकत्र करके सहयोग टीम को 9540050322 पर कॉल करें। हमारी गाड़ी आपके घर से सामान लेकर आएगी। आप अपना सहयोग हमारे कार्यालय आकर भी दें सकते हैं। हमारा पता है-

आर्य समाज मन्दिर,
डी.सी.एम. रेलवे कोलोनी,
निकट फिल्मिस्तान, दिल्ली-110007

जन्मदिवस के अवसर पर कैलेण्डर का विमोचन

आर्य समाज मॉडल टाउन अमृतसर (पंजाब) में श्री धर्मपाल जी की पुत्रवधु श्री अदिति मेहरा जी और उनके पुत्र श्री विकास मेहरा जी जन्मदिन 17 जनवरी, 2021 के अवसर पर आर्यसमाज लारेन्स रोड के प्रधान श्री डॉक्टर ऐश्वर्या आर्य जी ने और सभी आर्यजनों ने कैलेंडर का विमोचन किया। यह कैलेण्डर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा प्रकाशित कराया गया है।

A special article on the 146th Birthday

Lala Lajpat Rai vision of Dalit Reformation

Lala Lajpat Rai, Sher-i-Punjab was, indeed a lion both in thought and deed, in what he professed and practiced, in his political, social and even economic ideas and ideals, in his sense of service, patriotism and nationalism, in his dealings with the 'old' and the 'new', the high and the mighty, and the low and the depressed. Issues and problems affecting he lot and destiny of the dalits had a special place in his ideas and vision of nation building. He witnessed the Indian society was characterized by status summation i.e. low status in the caste hierarchy itself implied a correspondingly low status in social, religious and economic position. Dalits formed the most indigent, ostracized, apolitical and illiterate section of the Indian society. During his student age Lala ji was attracted towards Aryasamaj because of its nationalistic outlook, its program of social reform, its education mission and the spirit of self-sacrifice, self-reliance and self-help that it instilled in the young minds. His views were nurtured by the company of brilliant scholar Pundit Guru Dutt Vidyarthi and Lala Hansraj with whom he later established DAV institutions.

Lala ji considered the rigidity of Hindu Caste system as bane of Hindu society and a barrier in social and national progress of the Hindus. He considered it as a disgrace to humanity, sense of justice and feeling of social affinity. He considered allowing of valuable human resource to rot in a state of utter depression and helplessness as unsound by all aspects. He was against categorization of Indian population in census on basis of religion, caste, tribe etc. as an attempt by Britishers to implement divide and rule policy. He openly condemned Christian missionaries proselytizing activities and considered it as regular toll and loss to Hindu society. He said that the missionaries who were posing as social levelers and egalitarians had failed to eradicate caste distinctions and were only building castles in the air. Christianity has failed to emancipate caste system while the bureaucracy wanted to give caste a new orientation to make it subservient to imperial needs. He considered caste and inter caste jealousies as blockage for national progress. He was critical of maltreatment meted out to dalits in different parts of country. In one of speeches as president of depressed classes at Gurukul Kangdi he chided the Rajputs of Hoshiarpur for cruelty to Kabirpanthis, the Brahmans of Jammu for placing a hot plate iron on the body of a Vashisht caste Hindu and people of Ludhiana for not allowing a Ramdasi Hindu to drink water from municipal tap. He was critical of Hindu attitude towards untouchables before and after conversion. He said as a Hindu you won't touch him [Dalit], you would not let him sit on the same carpet with you, you would not offer him water in your cups, you would not accept water or food touched by him, you would not let him enter your temple, in fact you would not treat him like a human being. The moment he becomes a Mohammadan or a Christian, without even giving up his ancestral occupation, you are all smiles to him, you welcome him to your home; and have no objection at times to offer him drink and food in your utensils etc. What an irony? What a paradox? Why and where did the so much boasted of tolerance of the Hindus disappear, the moment that tolerance was demanded by the classes lower in the social scale? Was that Hinduism? No, he believed that I was nothing but disgrace to the good name of Hinduism.

Lala ji pressed on leveling down of all equalities and wanted that the reformation must begin from below. He supported Varna system and rejected caste system. He pointed out that the Hindus had established their caste system (Varna system) on basis of work, merit and disposition. The division was founded on justice and the needs and principles of the community. But afterword's the classification became purely a matter of birth and the institution of caste was clothed with a divine sanction to the glory of the Brahman and the desecration of the Shudra.

Lala ji supported the Aryasamaj concept of Shuddhi of dalits who were made non Hindu by force or incentive in past. Aryasamaj motive was not only to water down the apartheid character of the caste superstructure of the Hindu society by asserting that individual's caste status was always achieved and not ascribed, and by reclamation, re-conversion and Shuddhi, the Aryasamaj put the dalits at a slightly higher social substratum, but it also made systematic and sustained efforts to make the untouchables coalesce in the society as an agreeable section. Aryasamaj was instrumental in providing age old deprived facilities like water, education, technical training and thus economic uplift. The main idea behind this exercise was eradication of evils of caste system and creation of Hindu Sangthan. The social work done by Aryasamaj in different famines and opening of orphanages for orphans was another achievement to his works. The inter caste marriages and widow remarriage was like social revolution in caste ridden society. Opening of school, college and Gurukul both for boys as well as girls where education was provided irrespective of caste differentiation was turning point in field of education.

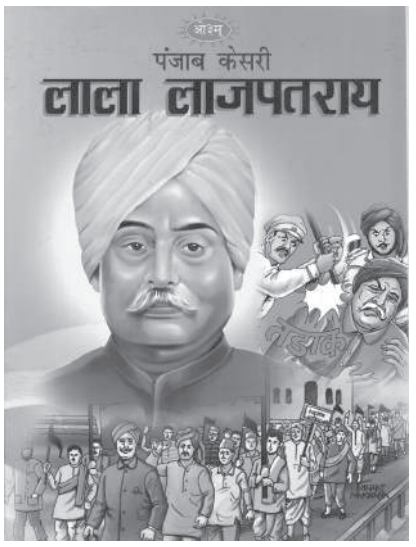

In nutshell, Lala ji had a very soft corner for the dalits and his remedial measures had the stamp of his own making. The social and national efficiency of a nation can never be achieved until hard steps are not taken to eradicate the evils of caste system. The dream of Lala ji is still unfilled even after 68 years of independence because of lack of political will. Today caste is withering but casteism is flourishing. The evil of casteism must be destroyed from our minds to unite Humanity.

- Dr. Vivek Arya

Makers of the Arya Samaj : Pt. Guru Dutt ji

Continue From Last issue

He soon began to suffer from bad colds. He also had a bad attack of coughing. He was, therefore, advised by some of his friends to go to a hill-station. He went to Murree, in the company of L. Lajpat Rai. There he developed fever. But he was so careless about his health that he accepted an invitation to attend the anniversary of the Peshawar Arya Samaj. On reaching it he delivered two or three lectures. Then he went back to Lahore. At Lahore his life was as full of activities as before. The Arya Samaj had problems to face, to which he gave much of his time. He also defended the Arya Samaj against the attacks of the orthodox Hindus. In reply to a lecture given by one of them he gave such a fine speech that fifty persons joined the Arya Samaj. Then one of the orthodox Hindus said that Pandit ji did not know how to speak in Sanskrit. He took up the challenge and delivered a speech in Sanskrit for a whole hour. This indicates the extent of his leaming.

In the meantime his condition became critical and people thought his end was near. A little later the anniversary of the Lahore Arya Samaj was held. But he did not attend it. Though he was only a skeleton of his former self, he continued to attend the meetings ofthe DA.V. College Managing Committee.

After a few days he fell very ill. He was taken to Gujranwala for treatment. The doctor did his best, yet the patient did not feel better. He was then taken to Lahore where he was treated by several doctors and vaids. For a few days his condition improved and people began to think that he would be all right. But it was a false hope. It soon came to be known that the disease was past cure.

During the days of his illness Panditji showed wonderful powers of endurance. Not once did he express any kind of anxiety about his health. He simply asked one of his friends to read the Upanishadas to him daily. Another friend sang some hymns to him. He himself repeated the Ved Mantras. By this means he remained calm and serene to the last.

On the 18th of March, 1890, he breathed his last at 7 o' clock in the morning. The news ofhis death spread rapidly. A large number of people gathered in front of his house. Every one of them looked sad and dispirited and all felt the loss to be great. When the dead body was taken to the cremation ground, it was followed by many persons. Though all were full of grief yet saddest of all was his mother. She cried very piteously, and her grief pierced the heart of everybody.

Meetings of condolence were held all over the province and many resolutions were passed. One of the papers wrote, "The whole Punjab is in mourning on account ofthe death of Pt. Guru Dutt. It is a pity that he should have been cut off so early in life. He was one of the leaders of the Arya Samaj and his loss is felt very keenly by every Arya Samajist. The deceased was a seeker after truth. He was a great scholar of Sanskrit. He was a man of restless activity and firm determination. He was a remarkable speaker and a fine debater. He was a man of spotless purity and was entirely free from deceit and vanity. He had a wonderful hold on people and his house was the meeting place of all kinds of men."

A Christian paper wrote about him, "Pt. Guru Dutt who died a few days ago was a prominent member of the Arya Samaj. His death is a great public loss and all have felt it keenly. He was a public spirited man who worked for the good of his country. He was very fond of study, and was in touch with the problems of the world of today. He was a great scholar of Sanskrit and wrote several books on the Vedas. All admired him for his simplicity, devotion to truth and kindness of heart."

A Muslim paper wrote the following about him, "Pt. Guru Dutt knew Western Literature as. much as Sanskrit. He was an eloquent speaker and hisspeeches in English were very fine. He sacrificed his life for the Arya Samaj, because he was so devoted to it. It is a pity that he should have died so early."

Meetings of condolence were held all over the province and many resolutions were passed. One of the papers wrote, "The whole Punjab is in mourning on account ofthe death of Pt. Guru Dutt. It is a pity that he should have been cut off so early in life. He was one of the leaders of the Arya Samaj and his loss is felt very keenly by every Arya Samajist. The deceased was a seeker after truth. He was a great scholar of Sanskrit. He was a man of restless activity and firm determination. He was a remarkable speaker and a fine debater. He was a man of spotless purity and was entirely free from deceit and vanity. He had a wonderful hold on people and his house was the meeting place of all kinds of men."

To be continued.....

With thanks By:
"Makers of Arya Samaj"

क्रोध को वश में करने के उपाय

- डॉ. स्वामी देवव्रत सरस्वती

गतांक से आगे -

.....कई बार हमें क्रोध इसलिये आता है कि हम अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति भली भाँति दूसरों के सामने नहीं कर पाते। आत्मविश्वास की कमी, भय, संकोच या अपमान होने के भय से हम अपनी क्रोध की भावनाओं को दबा लेते हैं जो आगे जाकर ज्वालामुखी बन जाती है। इसलिये जिन लोगों पर आपका विश्वास है उनके समक्ष विनम्र होकर अपनी बात खुलकर कह देनी चाहिये। इससे चित्त हल्का हो जायेगा।.....

5. शान्त होकर सुनें - यदि आप अपनी और दूसरों की बातों को शान्त मन से विचार करेंगे तो क्रोध का मूल कारण क्या है इसका ज्ञान हो जायेगा। दूसरों की बातों को शान्त चित्त हो सुनने से क्रोध एवं उसके कारणों को सहज में ही जाना जा सकता है।

6. अपनी भावनाओं को विनम्र होकर अभिव्यक्त करें - कई बार हमें क्रोध इसलिये आता है कि हम अपनी भावनाओं की अभिव्यक्ति भली भाँति दूसरों के सामने नहीं कर पाते। आत्मविश्वास की कमी, भय, संकोच या अपमान होने के भय से हम अपनी क्रोध की भावनाओं को दबा लेते हैं जो आगे जाकर ज्वालामुखी बन जाती है। इसलिये जिन लोगों पर आपका विश्वास है उनके समक्ष विनम्र होकर अपनी बात खुलकर कह देनी चाहिये। इससे चित्त हल्का हो जायेगा।

7. क्षमा करो और भूल जाओ - गलती किसी से कहीं भी हो सकती है। इसका अभिप्राय यह नहीं है कि हम क्रोधित होकर कोई गलत पग उठायें। शास्त्रकार कहते हैं- 'क्षमया क्रोध जयेत्' क्षमादान से क्रोध पर विजय प्राप्त करें। क्रोध व्यक्ति को क्षुद्र और क्षमा महापुरुष बनाती है।

8. दूसरों पर विश्वास करें - अपने और दूसरों पर विश्वास करने से क्रोध का अवसर आता ही नहीं। क्रोध के वशीभूत हो हम बेबस या उसके दास बन जाते हैं। एक मिनट का क्रोध घण्टों का सुख चैन छीन लेता है। यदि जीवन में यश चाहते हैं तो विश्वास की भावना बनायें।

9. विनम्रता - विनम्र बनें। विनम्र व्यक्ति से क्रोध डरता है। जीवन में कभी पश्चाताप नहीं करना पड़े इसके लिये नम्रता को अपनायें। गलती अपनी है या दूसरों की यह जान उसे सहन करने का अभ्यास करें। अपने या दूसरे से अधिक अपेक्षा जब की जाती है और यदि वह पूरी नहीं होती तो निराशा उत्पन्न होती है। जब इच्छाओं का विघात होता है तो क्रोध और हिंसा की भावना जाग्रत होती है। इसलिये अपनी सीमा या क्षमता को देखें। सभी कार्य तुम्हारी मर्जी के अनुसार हो जाये ऐसा सम्भव नहीं है। इस सत्य को स्वीकार करें।

10. आनन्दित रहें - सदा मौज मस्ती और प्रसन्न रहने वाले व्यक्ति कदाचित ही क्रोध में आते हैं। किसी भी परिस्थिति में प्रसन्न चित्त रहने का गुर सीखें। '**हर हाल मस्त हर चाल मस्त**' मन पसन्द संगीत सुनें। साथियों से हँसी-मजाक करें। अपना बौद्धिक विकास और कठोर परिश्रम करें।

11. कटु वचन न बोलें - क्रोध का मुख्य कारण अप्रिय अर्थात् कटु वाणी का प्रयोग करना है। तीर तलवार के घाव औषध प्रयोग से मर जाते हैं परन्तु वाणी का घाव जन्म भर नहीं भरता। वाणी का वहीं पर प्रयोग करना चाहिये जहां वह किसी उद्देश्य की पूर्ति में सहायक हो। अनावश्यक बोलना, बिना अवसर के बोलना, चुगली करना, कटु भाषण ये सब वाणी के दोष हैं।

महात्मा बुद्ध ने कहा है कि कभी भी वैरभाव से वैर शान्त नहीं होता अपितु वैरभाव का त्याग करने से ही वह शान्त होता है। यही सनातन धर्म है।

नहि वैरेण वैराणि शाम्यंति कदाचन।
अवैरेण तु शाम्यन्ति धर्म एष सनातनः।।

❑

शोक समाचार

भारत से बाहर विदेशों में वैदिक धर्म के प्रचार में रत आर्य नेताओं के निधन से गहरा दुःख

श्री अमर ऐरी जी का निधन

आर्यसमाज मारखम ओन्टारियो, कनाड़ा के प्रधान श्री अमर ऐरी जी का दिनांक 17 जनवरी, 2021 को प्रातः 8 बजे निधन हो गया।

प्रो. उषा देसाई का निधन

आर्यसमाज साउथ अफ्रीका की प्रथम महिला प्रधाना, एवं आजीवन उप प्रधाना श्रीमती प्रो. उषाबेन देसाई जी का दिनांक 13 जनवरी, 2021 को निधन हो गया। उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति के साथ 15 जनवरी,2021 को सम्पन्न हुआ। उनकी स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा 17 जनवरी को सम्पन्न हुई। सार्वदेशिक सभा के उपमन्त्री एवं दिल्ली सभा के महामन्त्री श्री विनय आर्य जी ने वर्चुअल रूप से उपस्थित होकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए।

श्री बाल्मीकि प्रसाद आर्य को पत्नीशोक

आर्यसमाज च्वेप्वे, यंगून (यांमार) के प्रधान श्री बाल्मीकि प्रसाद आर्य जी की धर्मपत्नी श्रीमती सावित्री देवी जी का 14 जनवरी, 2021 को 96 वर्ष की आयु में यंगून में निधन हो गया। 15 जनवरी को उनका अन्तिम संस्कार पूर्ण वैदिक रीति से यंगून में किया गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दुःख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

ओ३म्
भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)
सत्य के प्रचारार्थ
सत्यार्थ प्रकाश
सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन
कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें
आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650522778
E-mail : aspt.india@gmail.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

एवं नकद राशि देकर सम्मानित किया गया। स्वामी प्रणावानंद ने भजनोपदेशकों का उत्साहवर्धन करते हुए अपने सन्देश में कहा कि आज गुरुकुलों में आर्ष शिक्षा प्रणाली की महती आवश्यकता है, इसलिए हमें प्रत्येक गुरुकुल में आर्ष शिक्षा प्रणाली का एक अलग से विभाग चलाकर सुयोग्य विद्वान तैयार करने चाहिए।

श्री विनय आर्य जी ने गुरुकुलों के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा कि आर्य समाज ने ही भारतीय संस्कृति, सभ्यता और संस्कारों को पुनर्जीवित करने के लिए गुरुकुलों की स्थापना की थी। वर्तमान में गुरुकुलों की आर्थिक स्थिति अच्छी नहीं है। अतः हमें गुरुकुलों का आर्थिक सहयोग करना चाहिए। गुरुकुल ही वह अनुपम स्रोत है जहां से वैदिक धर्म, संस्कृति और संस्कारों के प्रचार- प्रसार के लिए

समाचार संशोधन

खेद है कि आर्यसन्देश के दिनांक 28 दिसम्बर, 2020 से 3 जनवरी, 2021 अंक 6 में पृष्ठ 7 पर प्रकाशित शोक समाचार - श्री वीर जी का निधन में उन्हें आर्यसमाज सीतापुर का प्रधान लिखा गया है। कृपया इसे सुधारकर आर्यसमाज सीतापुर का पूर्व प्रधान पढ़ा जाए। सम्पादक मंडल इस भूल हेतु खेद व्यक्त करता है। - *सम्पादक*

पदमिनी आर्ष कन्या गुरुकुल ....

सहयोगी विद्वान तैयार किए जाते हैं। इस अवसर पर सम्मानीय भजनोपदेशक श्री सहदेव बेधड़क जी ने नए भजनोपदेशकों के बनाने पर जोर दिया। डॉ. सोमदेव शास्त्री जी ने सभी उपस्थित संन्यासियों, अधिकारियों, भजनोपदेशकों का स्वागत और धन्यवाद करते हुए कहा कि आर्ष कन्या गुरुकुल चित्तौड़गढ़ को पुनः प्रारंभ करने का मेरा निश्चय आज फलीभूत हो रहा है।

आज 13 कन्याओं ने गुरुकुल में प्रवेश लिया है और भविष्य में यह संख्या और बढ़ेगी। गुरुकुल की सम्पूर्ण व्यवस्था आर्यजनों के सहयोग से की जाएगी। उन्होंने अपने विशिष्ट सहयोगी श्री जीववर्धन शास्त्री जी, डॉ. सीमा आचार्या जी, गुरुकुल ट्रस्ट के सदस्य श्री देवेंद्र शेखावत जी, श्री रूपसिंह शेखावत जी, मा. गजराज जी, मा. यशपाल जी, श्री कन्हैयालाल शर्मा जी, श्री राजगोपाल आर्य मन्त्री जी, श्री कुंजीलाल पार्टीदार जी, श्री दशरथ पार्टीदार जी, श्री हरिदेव सिंह जी, श्री धर्मेंद्र आर्य जी, श्री गुलाब सिंह जी, आचार्य दयासागर जी इत्यादि महानुभावों का विशेष धन्यवाद किया। प्रेम सौहार्द के वातावरण में कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

आत्म प्रज्ञा आश्रम, बागनी में 7 बच्चों का यज्ञोपवीत संस्कार

17 जनवरी को नूरपुर जिला कांगड़ा हिमाचल प्रदेश में स्वामी वेद प्रकाश सरस्वती जी द्वारा स्थापित आर्यों के तीर्थस्थल के रूप में उभरते हुए, आत्म प्रज्ञा आश्रम, बागनी में 7 बच्चों का यज्ञोपवीत संस्कार महर्षि दयानंद सरस्वती कृत वैदिक संस्कार विधि अनुसार कराया। जिनके नाम इस प्रकार हैं - 1.सुखवीर आर्य, 2.अनिल आर्य, 3.अनमोल आर्य, 4.अभिराज आर्य, 5.निखिल आर्य, 6. अनुज आर्य, 7.दीपचंद आर्य। सभी बच्चों ने एक दिन का उपवास रख कर यज्ञोपवीत संस्कार कराया। श्री वेद प्रकाश सरस्वती जी ने युवावस्था में ही संन्यास ग्रहण करके महर्षि दयानंद सरस्वती जी का अनुसरण करते हुए अपना जीवन सत्य सनातन वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार को अर्पित करते हुए यहां वार्षिक उत्सव भी करवाये तथा हि. प्र. व पंजाब को विशेषकर अपनी कर्मभूमि बनाकर अपनी लोकप्रियता के नये आयाम स्थापित किए। - ***विपिन महाजन आर्य***
महामन्त्री, आर्य प्रतिनिधि सभा हि.प्रदेश

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 18 जनवरी, 2021 से रविवार 24 जनवरी, 2021

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)-11/6071/2021-22-2023

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 21-22/01/2021 (गुरु-शुक्रवार)

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं. यू. (सी.) 139/2021-22-2023

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 20 जनवरी, 2021

विश्व का पहला वेद आधारित लाइव टीवी चैनल

ARYA SANDESH TV एप को डाउनलोड करें।

एप्प डाउनलोड करने के लिए लिंक पर जाएं - https://bit.ly/2OWyt2x

वैदिक धर्म के सन्देश को विश्व में प्रसारित करने के लिए यह सन्देश अधिक से अधिक लोगों को फॉरवर्ड करें एवं एप्प डाउनलोड कराएं।

खुशखबरी! खुशखबरी!!

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा

के अन्तर्गत

वैदिक प्रकाशन द्वारा प्रकाशित

वैदिक साहित्य

अब

amazon

पर भी उपलब्ध

अपनी पसंदीदा वैदिक पुस्तकें घर बैठे प्राप्त करने के लिए आज ही लॉगइन करें

https://amzn.to/3i3rKl7

अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें

व्यवस्थापक, प्रकाशन विभाग

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा (पं.),

15, हनुमान रोड, नई दिल्ली-1

मो. 09540040339, 011-23360150

प्रतिष्ठा में,

आप भी बनें यज्ञमित्र

कम से कम 12

नए परिवारों में यज्ञ कराएं

दिल्ली राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र एन.सी.आर. में यज्ञमित्र बनने के लिए सम्पर्क करें-

श्री सतीश चड्ढा जी

महामन्त्री, आर्य केन्द्रीय सभा दिल्ली

मो. 954004141, 9313013123

पृष्ठ 5 का शेष

की आवश्यकता थी उसके स्थान पर निम्न स्तर के व्यक्तिवाद का प्रचार किया गया। **राष्ट्रीय स्वाभिमान शब्द केवल शब्द कोश की शोभा बढ़ाने लगा अथवा कुछ एक सरकारी प्रश्रय से रहित स्वयं सेवी सामाजिक संस्थाओं में बौद्धिक सम्मेलनों के अवसर पर मात्र सुनने के लिए रह गया है।**

जब कि विश्व के प्राय: सभी देशों के नागरिक राष्ट्रीयता की सुरक्षा के लिए अपना सर्वस्व अर्पण करने के लिए सतत उद्यत रहते हैं और यावज्जीवन यथाशक्ति उसकी रक्षा करते हैं। **जापान एवं जर्मनी इसके लिए विश्व में सर्वाधिक प्रसिद्ध हैं और विश्व के अन्य देशों में भी इसका कम मूल्यांकन नहीं होता। विदेशियों से हमने मद्यपान, खड़े होकर भोजन करना आदि अपकृत्य तो सीखे किन्तु थोड़ी-सी राष्ट्रीयता की भावना नहीं सीखी।** इसी का यह परिणाम है कि आज भारतवर्ष में राष्ट्रीय स्वाभिमान की बात करना संकीर्णता का पर्याय घोषित किया जाने लगा है।

अब इससे छुटकारा पाने का एक मात्र मार्ग है राष्ट्रीय स्वाभिमान की प्रचण्ड ज्वाला का प्रज्जवलन और यह होगा युवा शक्ति एवं जागरूक नागरिकों के द्वारा अपने अन्दर राष्ट्रीय स्वाभिमान की रक्षा का संकल्प लेने से। आइए! हम इस संकल्प को भारत के हर घर में पहुंचाएं, जिससे यह देशद्रोह रूपी राक्षसी जलकर भस्मसात् हो जाए तथा भारत (आर्यावर्त्त) अपने अतीत के जगद्गुरु पद पर अधिष्ठित होकर पुन: विश्व को सन्मार्ग दिखा कर सुख शान्ति एवं प्रेम का संदेश प्रदान कर सके।

वयं तुभ्यं बलिहृत: स्याम। *अथर्ववेद 12/1/62*

हे मातृभूमे! हम तेरे गौरव की रक्षा के लिए सर्वस्व समर्पित कर दें।

- साभार : विवेक सन्दोह

जानिये एम डी एच देगी मिर्च की शुद्धता, गुणवत्ता और उत्तमता की सच्चाई

यह मिर्च कर्नाटक में पैदा होती हैं। वहां पर लगभग 1000 औरतें पूरा दिन सिर्फ मिर्च की डंडी उतारने के काम में लगी रहती हैं। उसी मिर्च से देगी मिर्च तैयार होती है।

क्या आप लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला खाना चाहते हैं या बिना लकड़ी (डंडी) वाला मिर्च मसाला ?

लकड़ी (डंडी) बिना मिर्च मसाला शुद्धता और स्वाद के गुणों से भरपूर होता है। मसाला लगता भी कम है और स्वाद भी भरपूर आता है। क्योंकि बिना लकड़ी (डंडी) के मिर्च की शुद्धता 20% से भी ज्यादा और बढ़ जाती है। जबकि लकड़ी (डंडी) मिला मिर्च मसाला लगता भी ज्यादा है और स्वाद भी नहीं आता है और तो और यह सेहत के लिये भी नुकसान दायक होता है।

आप खुद ही फैसला कीजिये कि आप कैसा मिर्च मसाला खाना पसंद करेंगे क्योंकि सवाल सिर्फ शुद्धता और स्वाद का ही नहीं आप की सेहत का भी है।

MDH मसाले सेहत के रखवाले असली मसाले सच –सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली -110015 फोन नं० 011-41425106-07-08

E-mails : mdhcare@mdhspices.in, delhi@mdhspices.in www.mdhspices.com

ESTD. 1919

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए मुद्रक, प्रकाशक व सम्पादक श्री धर्मपाल आर्य द्वारा हरिहर प्रैस, ए-29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र-1, नई दिल्ली-28 से मुद्रित एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15-हनुमान रोड, नई दिल्ली-1; फोन : 23360150; 23365959; E-mail : aryasabha@yahoo.com; Web : www.thearyasamaj.org से प्रकाशित

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ० ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह